मेरी अहमियत है | कक्षा में बच्चों की आवाज़ और उपस्थिति

मथुमिता आर.

महामारी के बाद से, मैं ऐसे प्रभावी माध्यमों की तलाश में हूँ जिनके द्वारा बच्चों को इस तरह व्यस्त किया जा सके कि सीखने के प्रति उनकी रुचि धीरे-धीरे वापस जाग जाए। कक्षा में बच्चों के साथ आसान और मज़ेदार तरीक़े से जुड़ने के लिए, खेल और नाटक-आधारित गतिविधियाँ हमेशा से मेरे पसन्दीदा साधन रहे हैं। शरीर की हरक़तों और चेहरे के भावों ने मुझे मेरी भाषा की अड़चन ख़त्म करने में बहुत मदद की है क्योंकि मैं दक्षिण-भारतीय हूँ और एक ऐसे क्षेत्र में काम कर रही हूँ जहाँ बच्चों की पहली भाषा बुन्देलखण्डी है। कक्षा में पढ़ाने के शुरुआती दिनों में मैंने हमेशा यह सुनिश्चित किया कि मैं अलग-अलग वार्मअप गतिविधियाँ और कक्षा की अवधि के बीच में भी तरह-तरह की गतिविधियाँ करवाऊँ ताकि बच्चे उनमें मग्न रहें और कक्षा में ख़ूब जोश बना रहे।

ये माध्यम किस तरह से बच्चों के विकास से जुड़े विभिन्न मूल्यों, जैसे आत्म-विश्वास, सामूहिक-कार्यक्षमता, कड़ी मेहनत, आपसी एका व परस्पर तालमेल आदि को बेहतर बनाने की ओर सूक्ष्म रूप से ले जाते हैं, यह तो सभी को मालूम है। पर इसके अलावा, कक्षा में अपने आपसे और सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से ठीक से भाग लेना सीखने से, बच्चों को एक आनन्ददायी सामाजिक अनुभव मिलता है और अपने साथियों के साथ स्वस्थ पारस्परिक रिश्ते बनाने में भी मदद मिलती है। इस तरह के सामाजिक कौशल हासिल करने से बच्चों का सामाजिक व संज्ञानात्मक विकास होता है। इनके द्वारा, बच्चे अपने आपको, अपनी ख़ूबियों और कमज़ोरियों को अच्छे से समझ पाते हैं और जैसा कि मारग्रेट मीड ने कहा है, ये बच्चों को 'स्वयं की एक समझ गढ़ने' करने में मदद करते हैं।

गोल घेरा बनाना

मैंने हर रोज़ उपरोक्त दोनों माध्यमों का प्रयोग किया और इसे नीरस होने से बचाने के लिए इसमें ख़ूब सारी विविधता का भी इस्तेमाल किया। अपने इस स्कूली अनुभव में मैंने पाया कि बच्चों को एक बड़े घेरे में खड़े होकर, खुलकर हिलना-डुलना, बोलना, गाना या शारीरिक संकेतों के साथ पाठ पढ़ना बहुत पसन्द होता है, यानी हर वह चीज़ जो सामान्यतः उन्हें कक्षा में नहीं करने दी जाती! शुरुआती दौर में, मैंने पाठ और क़रीब-क़रीब सभी गतिविधियाँ गोल घेरे में बैठे-बैठे ही करवाईं।

अपना स्कूली कार्य मैंने सबसे पहले एक परिचय गतिविधि से शुरू किया - हम सब एक गोल घेरे में खड़े हो गए और बारी-बारी अपना परिचय किसी शारीरिक संकेत के साथ देना शुरू किया। पहले तो बच्चे शर्मा रहे थे, मुझे और अपनी क्लास टीचर को शारीरिक संकेतों के साथ अपना परिचय देते हुए देखने के बाद भी। इस पर, मैंने उन्हें कुछ संकेत करने के लिए ज़ोर देकर प्रेरित किया और उन बच्चों की मदद की जो ख़ुद का परिचय देने वाला कोई संकेत करने में शर्मा रहे थे। सभी को इस गतिविधि में संलग्न रखने के लिए, मैंने बाक़ी बच्चों को एक साथ मिलकर यह प्रश्न पूछने के लिए कहा : "तुम्हारा नाम क्या है?" हर बच्चे को, किसी शारीरिक संकेत और आवाज़ में उतार-चढ़ाव लाकर, इस प्रश्न का उत्तर इस तरह देना था, "मेरा नाम है... ।"

पर मज़ा यहीं ख़त्म नहीं होता था। बाक़ी बच्चों को हर उस बच्चे के शारीरिक संकेत को दोहराने के लिए कहा जाता था जिसने अपना परिचय दे दिया होता था। ऐसा इसलिए भी ताकि उन्हें नाम याद रखने में आसानी हो। इसलिए, जब एक बच्ची ने परी की तरह उड़ने की नक़ल करते हुए कहा, "मेरा नाम सौम्या है", तो बाक़ी बच्चों ने उसके उड़ने के संकेत की नक़ल करते हुए दोहराया, "मेरा नाम सौम्या है।"

मज़ाक में, मैंने उन्हें रोका और पूछा, "क्या तुम्हारा नाम सौम्या है?" तो बच्चे हँस दिए। फिर मैंने सौम्या की ओर इशारा करके उनसे पूछा, "तो तुम्हें क्या कहना चाहिए?" तो सही उत्तर आया, "उसका नाम सौम्या है!" यह गतिविधि चलती रही जिसमें बच्चे एक-दूसरे का नाम जानते गए और साथ ही इस बात की भी कोशिश होती रही कि जो बच्चे कक्षा में आमतौर पर नहीं बोलते, वे भी बोलें। क्लास टीचर भी इस बात से ख़ुश थीं कि इन गतिविधियों के माध्यम से, जो बच्चे कक्षा में ज़्यादा भाग नहीं लेते थे, वे भी हरक़त में आए और इनमें शामिल रहे। मेरा पुरज़ोर विश्वास है कि ये गतिविधियाँ हमारी भीतर की लालसाओं की अभिव्यक्ति होती हैं और कुछ खेलों/ गतिविधियों में भाग लेते हुए बच्चे आनन्द व सन्तोष महसूस करते हैं।

एक सुरक्षित माहौल बनाना

एक दिन स्कूल शुरू होने के बाद, मैं अध्यापकों और प्रधानाध्यापिका से बातचीत करती रही और कक्षा में जाने

में देर हो गई। इसलिए हम सब जल्दी से पढ़ाई में लग गए। अचानक एक बच्चे ने मुझसे पूछ लिया, "क्या आज हम कुछ करेंगे नहीं?" उसका इशारा गतिविधियों की तरफ़ था। कई और बच्चे भी बोलने लगे, "चलो कुछ करते हैं, चलो ना" (उन्होंने शारीरिक हलचलें करते हुए वॉर्मअप गतिविधियों की ओर संकेत किया)। मुझे भी एकदम से जोश आ गया क्योंकि कुछ गतिविधियों को, अच्छी शुरुआत के बाद आगे जारी रखने के लिए, यह ज़रूरी है कि उनमें भाग लेने वालों का उत्साह बना रहे। जो बच्चे मुझसे बात करने, मिलने-जुलने में हिचकिचाते थे और बस अपनी क्लास टीचर के अलावा किसी की नहीं सुनते थे, अब मुझसे बिना किसी डर, शर्म और हिचक के बात कर रहे थे। इस बात से मुझे समझ आया कि कैसे इस तरह की गतिविधियाँ, जिनमें पारम्परिक शान्त कक्षा की धारणा को तोड़ना शामिल होता है, बच्चों को सहज कर देती हैं। मैंने पाया है कि जब बच्चे अपने आपको एक सुरक्षित माहौल में पाते हैं और उन्हें लगता है कि वह स्थान उन्हीं का है, तो पूरी स्कूली प्रक्रिया में उनकी रुचि बढ़ने लगती है, जिसकी शुरुआत होती है रोज़ स्कूल आने से, फिर धीरे-धीरे सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी में सुधार होता जाता है और इसी तरह और भी चीज़ें बेहतर होती जाती हैं।

एक और घटना में, जब सब बच्चे एक घेरे में कविता पाठ करने के लिए ख़ूब उत्साहित खड़े थे, तो अमन नाम का एक बच्चा मेरे पास आया। उसकी तबीयत ठीक नहीं लग रही थी और उसने पूछा कि क्या वह बैठ सकता है। मैंने उसे बैठकर कविता सुनने के लिए कह दिया। इस घटना से भी पता चलता है कि यह कक्षा अब ऐसी सुरक्षित जगह बन गई थी जहाँ एक बच्चा मेरे पास आकर अपने मन की बात कह सकता था। बच्चा अपनी ज़रूरतों को समझकर बोल पाया, यह मेरे लिए एक अहम बात थी, क्योंकि इस वाक़िये ने मुझे भी यह याद दिलाया कि कैसे इस तेज़ रफ़्तार वाली दुनिया में रहते हुए हम अपनी ही ज़रूरतों को समझ नहीं पाते। यहाँ इस बच्चे ने अपनी ज़रूरत बताई और बस बिना भाग लिए चुपचाप बैठा नहीं रहा। यह पल मेरे लिए अपने अन्दर झाँकने व सीख लेने का था।

रोल-प्ले के माध्यम से गणित सीखना

मैं अपने सत्र की योजना बनाने में इस बात का ज़रूर ध्यान रखती हूँ कि उसमें किसी अवधारणा से जुड़ी बहुत सारी गतिविधियाँ हों, ताकि मैं बच्चों के साथ इस तरह जुड़ सकूँ कि उनकी ऊर्जा और उनकी ध्यान बनाए रखने की अवधि का सर्वोत्तम ढंग से उपयोग हो सके। चूहे की कविता पढ़ते और गाते समय हमने चूहे और बिल्ली का एक नाटक किया। मैंने पहले बच्चों को चूहा और बिल्ली बनने के लिए कहा। पर वे समझ नहीं पा रहे थे कि मैं उनसे क्या चाहती थी, तो मैं बिल्ली बन गई और उन्हें चूहा बनकर आस-पास भागने के लिए कहा। इस खेल में, बिल्ली (मुझे) को चूहे (बच्चों) को पकड़ना था और जिसको भी बिल्ली छूती, वह खेल से 'आउट' हो जाता। आउट होने वालों को चुपचाप बिना हिले-डुले लेटे रहना था। कुछ ज़्यादा ऊर्जावान बच्चों को मैंने भागने की बजाय बहुत धीरे-धीरे चलने के लिए कहा। बाद में, एक बच्चे ने मेरी जगह ले ली और वह बिल्ली बन गया। जल्द ही खेल में, 10 'आउट' और 3 'नॉट आउट' चूहे और एक बिल्ली बची रह गई। मैंने उन 3 'नॉट आउट' बच्चों को नीचे लेटकर सोने का नाटक करने को कहा और जो 'आउट' थे उन्होंने कुल चूहों की गिनती की।

कक्षा-1 के बच्चे शुरू में 9 चूहे गिन रहे थे, एक संग एक संगतता (one-to-one correspondence) विधि से और वे अपने आपको गिनना भूल जा रहे थे। उस समूह में कक्षा-2 के दो बच्चे थे, जो 9 चूहे ठीक से गिनने के बाद अपने आपको भी गिन पाए क्योंकि वे भी 'आउट' थे। इस क्रिया में सात बच्चों ने गणनांक के नियम (cardinality rule) को सही पकड़ा और मुझे आशा है कि इसके बाद बाक़ी बच्चे भी इस गणनांक के सिद्धान्त को आसानी से समझ जाएँगे।

चूँकि मैं इन माध्यमों का अक्सर इस्तेमाल करती हूँ, मुझे यह एहसास होता है कि ये माध्यम बच्चों को नई चीज़ों को अपनी गति से सीखने की गुंजाइश देते हैं। इनसे एक ऐसा माहौल बन जाता है जो उस प्रयोग-आधारित और अनुभवात्मक शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है, जिससे आगे जाकर बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है।

**बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं।*



मधुमिता आर. सागर, मध्य प्रदेश में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ एसोसिएट के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु से शिक्षा में स्नातकोत्तर डिग्री हासिल की है। उन्हें स्कूलों में बच्चों के साथ काम करना, पढ़ना, लिखना, ड्रामा और थिएटर पसन्द है। उनसे *mathumitha.r@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : पूनम जैन **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय